

१०४. धर्मानुरागाख्यानम्

विशुद्धकेवलज्ञानलोकालोकप्रकाशकम्। नमस्कृत्य जिनं वच्मि कथां धर्मानुरागजाम् ॥१॥
 अवन्तिविषये ख्याते प्रोज्जयिन्यां महापुरि। राजाभूद्धनवर्माख्यो धनश्रीकामिनीपतिः ॥२॥
 तयोः पुत्रः समुत्पन्नो लकुचो भूरिगर्ववान्। शत्रुसन्दोहमानाग्नि-शमनैकघनाघनः ॥३॥
 एकदा कालमेघाख्यम्लेच्छराजेन पीडिते। तद्देशेऽसौ कुमारश्च लकुचो बहुकोपतः ॥४॥
 गत्वा स्वयं रणे धृत्वा तं रिपुं कालमेघकम्। समानीय द्रुतं दत्त्वा स्वपित्रे धनवर्मणे ॥५॥
 कामचारं वरं प्राप्य ततः स्वपुरयोषिताम्। शीलभंगं चकारोच्चैः कामिनां सुमतिः कुतः ॥६॥
 श्रेष्ठिनः पुङ्गलस्यापि नागधर्मास्ति कामिनी। भूरिरूपश्रिया युक्ता तस्यामासक्तकोभवत् ॥७॥
 पुङ्गलोपि तदा श्रेष्ठी प्रज्वलन्कोपवह्निना। तं हन्तुमसमर्थः सन्तिष्ठते स्वगृहे ततः ॥८॥

१०४. धर्मानुराग-कथा

जो निर्मल केवलज्ञान द्वारा लोक और अलोक के जानने देखने वाले हैं, सर्वज्ञ हैं, उन जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार कर धर्म से अनुराग करने वाले राजकुमार लकुच की कथा लिखी जाती है ॥१॥

उज्जैन के राजा धनवर्मा और उनकी रानी धनश्री लकुच नाम का एक पुत्र था। लकुच बड़ा अभिमानी था, पर साथ में वीर भी था। उसे लोग मेघ की उपमा देते थे, इसलिए कि वह शत्रुओं की मानरूपी अग्नि को बुझा देता था, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना उसके बायें हाथ का खेल था ॥२-३॥

काल-मेघ नाम के म्लेच्छ राजा ने एक बार उज्जैन पर चढ़ाई की थी। अवन्ति देश की प्रजा को तब जन-धन की बहुत हानि उठानी पड़ी थी। लकुच ने इसका बदला चुकाने के लिए कालमेघ के देश पर भी चढ़ाई कर दी। दोनों ओर से घमासान युद्ध होने पर विजयलक्ष्मी लकुच की गोद में आकर लेटी। लकुच ने तब कालमेघ को बाँध कर पिता के सामने रख दिया। धनवर्मा अपने पुत्र की इस वीरता को देखकर बड़े खुश हुए। इस खुशी में धनवर्मा ने लकुच को कुछ वर देने की इच्छा जाहिर की। पर उसकी प्रार्थना से वर को उपयोग में लाने का भार उन्होंने उसी की इच्छा पर छोड़ दिया। अपनी इच्छा के माफिक करने की पिता की आज्ञा पा लकुच की आँखें फिर गई उसने अपनी इच्छा का दुरुपयोग करना शुरू किया। व्यभिचार की ओर उसकी दृष्टि गई तब अच्छे-अच्छे घराने की सुशील स्त्रियाँ उसकी शिकार बनने लगीं। उनका धर्म भ्रष्ट किया जाने लगा। अनेक सतियों ने इस पापी से अपने धर्म की रक्षा के लिए आत्महत्याएँ तक कर डालीं। प्रजा के लोग तंग आ गए। वे महाराज से राजकुमार की शिकायत तक नहीं कर पाते। कारण राजकुमार के जासूस उज्जैन के कोने-कोने में फैल रहे थे इसलिए जिसने कुछ राजकुमार के विरुद्ध जबान हिलाई या विचार भी किया कि वह बेचारा फौरन ही मौत के मुँह में फेंक दिया जाता था ॥४-७॥

यहाँ एक पुंगल नाम का सेठ रहता था। इसकी स्त्री का नाम नागदत्ता था। नागदत्ता बड़ी खूबसूरत थी। एक दिन पापी लकुच की इस पर आँखें चली गई बस, फिर क्या देर थी? उसने उसी

उद्याने क्रीडितुं गत्वा कदाचिल्लकुचो मुदा। पूर्वपुण्यप्रयोगेन दृष्ट्वा तत्र मुनीश्वरम् ॥९॥
 धर्ममाकर्ण्य जैनेन्द्रं शीघ्रं वैराग्यमाश्रितः। पुंगलेन तदा ज्ञात्वा गत्वा तत्र प्रकोपतः ॥१०॥
 वैराल्लोहशलाकाभिः सन्धिस्थानेषु कीलितम्। तच्छरीरं तदा सोपि जैनधर्मानुरागभाक् ॥११॥
 जित्वोपसर्गकं स्वामी परलोकं गतो ध्रुवम्। विचित्रं भव्यजीवानां चारित्रं भुवनोत्तमम् ॥१२॥
 स जयतु मुनिनाथो भूरिकष्टं सुजित्वा सपदि लकुचनामा प्राप्तवाञ्छर्मसारम्।
 गुणगणमणिरुद्रो बोधसिन्धुः प्रसान्द्रो जिनपतिहिमरश्मिः प्रोल्लसद्रश्मियोगात् ॥१३॥
 इति कथाकोशे धर्मानुरागरक्ताख्यानं समाप्तम्।

१०५. दर्शनाऽपतिताख्यानम्

संप्रणम्य जिनाधीशं सर्वदोषविवर्जितम्। दर्शनाच्च्यवनाख्यानं प्रवक्ष्ये जगद्दर्शितम् ॥१॥
 पाटलीपुत्रसन्नाम्नि पत्तने सुचिरन्तने। जिनदत्तोभवच्छ्रेष्ठी परमेष्ठिपदे रतः ॥२॥

समय उसे प्राप्त कर अपनी नीच मनोवृत्ति की तृप्ति की। पुंगल उसकी इस नीचता से सिर से पाँव तक जल उठा। क्रोध की आग उसके रोम-रोम में फैल गई वह राजकुमार के दबदबे से कुछ करने-धरने को लाचार था। पर उस दिन की बाट वह बड़ी आशा से जोह रहा था, जिस दिन कि वह लकुच से उसके कर्मों का भरपूर बदला चुका कर अपनी छाती ठण्डी करे ॥८-९॥

एक दिन लकुच वन क्रीड़ा के लिए गया हुआ था। भाग्य से वहाँ उसे मुनिराज के दर्शन हो गए। उसने उनसे धर्म का उपदेश सुना। उपदेश का प्रभाव उस पर खूब पड़ा। इसलिए वह वहीं उनसे दीक्षा ले मुनि हो गया। उधर पुंगल ऐसे मौके की आशा लगाये बैठा ही था, सो जैसे ही उसे लकुच का मुनि होना जान पड़ा वह लोहे के बड़े-बड़े तीखे कीलों को लेकर लकुच मुनि के ध्यान करने की जगह पर आया। इस समय लकुच मुनि ध्यान में थे। पुंगल तब उन कीलों को मुनि के शरीर में ठोक कर चलता बना। लकुच मुनि ने इस दुःसह उपसर्ग को बड़ी शान्ति, स्थिरता और धर्मानुराग से सह कर स्वर्ग लोक प्राप्त किया। सच है, महात्माओं का चरित्र विचित्र ही हुआ करता है। वह अपने जीवन की गति को मिनट भर में कुछ को कुछ बदल डालते हैं ॥१०-१२॥

वे लकुच मुनि जय लाभ करें, कर्मों को जीतें, जिन्होंने असह्य कष्ट सहकर जिनेन्द्र भगवान् रूपी चन्द्रमा की उपदेशरूपी अमृतमयी किरणों से स्वर्ग का उत्तम सुख प्राप्त किया, गुणरूपी रत्नों के जो पर्वत हुए और ज्ञान के गहरे समुद्र कहलाये ॥१३॥

१०५. सम्यग्दर्शन पर दृढ़ रहने वाले की कथा

सब प्रकार के दोषों रहित जिन भगवान् को नमस्कार कर सम्यग्दर्शन को खूब दृढ़ता के साथ पालन करने वाले जिनदास सेठ की पवित्र कथा लिखी जाती है ॥१॥

प्राचीन काल से प्रसिद्ध पाटलिपुत्र (पटना) में जिनदास नाम का एक प्रसिद्ध और जिनभक्त